समकालीन साहित्य

विकास, विस्थापन और समाज

सम्पादक

डॉ. पी. रवि : डॉ. मूसा एम.

वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
फ़ोन : +911123273167 फ़ैक्स : +911123275710
शाखाएँ
अशोक राजपथ, पटना 800 004, बिहार
कॉफ़ी हाउस कैम्पस, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211 001, उत्तर प्रदेश
महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा 442 001, महाराष्ट्र
सुल्तानिया रोड, मोतिया पार्क, भोपाल 462 001, मध्य प्रदेश
www.vaniprakashan.com
marketing@vaniprakashan.in
sales@vaniprakashan.in

SAMKALEEN SAHITYA : VIKAS, VISTHAPAN AUR SAMAJ
Edited by Dr. P. Ravi & Dr. Meena M.

ISBN : 978-93-89012-24-8
Criticism

© सम्पादक एवं लेखकगण
प्रथम संस्करण 2020

मूल्य : ₹ 595

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

सिटी प्रेस, दिल्ली-110 0xx में मुद्रित
वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसैन की कूची से

भूमिका

विकास, विस्थापन और साहित्य, साहित्य के अध्ययन के क्षेत्र में एकदम नया विषय है। अभी तक आलोचना के क्षेत्र में इस विषय को लेकर कोई पुस्तक नहीं प्रकाशित हुई है। समाजशास्त्र के क्षेत्र में विकास को लेकर एक–दो पुस्तकें आ गयी हैं। भारत विभाजन सम्बन्धी विस्थापन एवं शरणार्थी समस्याओं को लेकर पुस्तकें उपलब्ध हैं। लेकिन विकास, विस्थापन तथा उसके हेतु जो मानवीय एवं पर्यावरण–पारिस्थितिक संकट पैदा हुआ है, वह विभाजन सम्बन्धी विस्थापन से बिल्कुल अलग है। समकाल में इसी मुद्दे को लेकर साहित्य रचा जाता है, किन्तु उसके समग्र अध्ययन का कार्य नहीं हुआ है, जिसकी सख़्त ज़रूरत है। इसे मद्देनज़र रखते हुए कालटी श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में जो संगोष्ठी हुई, उसमें प्रस्तुत प्रपत्रों के साथ कुछ और आलेख जोड़कर पुस्तक बनाने का प्रयास हुआ, जिसका यह सुखद परिणाम है।

गत दो सालों से विकास जनित विभीषिकाओं से केरल प्रान्त जूझ रहा है, प्रस्तुत मुद्दे पर चर्चा करने के लिए यह त्रासदी ही काफ़ी है। उसमें विस्थापन बहुत कम हुआ पर विकास की त्रासदी केरल के आधे से अधिक लोग भुगत रहे हैं। यह मनुष्य का लालच और उसके कारण हुए अन्धाधुन्ध विकास का परिणाम है। गाँधी जी ने पहले ही मनुष्य के इस लालच के प्रति आगाह किया था। लेकिन लोग आधुनिक सभ्यता और तद्जनित सुविधाओं का पीछा करते रहे। हाल ही में माधव गाडगिल और कस्तूरी रंगन के सुझावों (पश्चिमी घाटी पर विकास को लेकर) को लेकर ये लोग बावला हो रहे थे। सभी राजनीतिक दल और अपने को सन्त कहते पादरी लोग तथा सभी उच्च एवं मध्यवर्ग के लोग विकास का नारा बुलन्द करते रहे। जो विरोध करते थे उनका विरोध पूँजी एवं चुनाव की राजनीति की दीवारों को तोड़ने लायक नहीं

रहा। उच्चतम न्यायालय के निर्णय, जो मरड के फ्लेट्स को ध्वस्त करने का है, को टाल–मटोल करने का प्रयास सभी राजनीतिक दल एवं विकासवादी कर रहे हैं। यह सिर्फ केरल का मामला मात्र नहीं कश्मीर–उत्तराखण्ड से लेकर केरल तक का है। भारत के महानगरों में पेयजल एवं शुद्ध वायु तक उपलब्ध नहीं है। हर कहीं ऑक्सिजन पारलर खोलने लगा है। कोच्ची शहर में भी अब ऑक्सिजन पारलर खुल गया है। फिर भी औद्योगिक विकास का नारा बुलन्द है। मिट्टी, पहाड़, जंगल, नदी–हर कहीं विकास का रौद्र रूप विद्यमान है। असल में इस तरह का विकास विनाश की भूमिका ही निभा रहा है। इस सन्दर्भ में जसिन्ता केरकेट्टा की चार पंक्तियोंवाली कविता 'हाँफती मशीनें' की पंक्तियाँ याद आती है।

मशीनें
पेड़ों को उखाड़ चुकने के बाद हाँफती हैं।
अब हाँफती मशीनें ढूँढती हैं
कहीं कोई पेड़ की छाँह।

अब बड़ी तादाद में साहित्य इस मुद्दे से मुखातिब होने लगा है। लेकिन आलोचना नहीं के बराबर है। कामायनी का अध्ययन आज मनुष्य के अहंकार के परिणाम की दृष्टि से करने लगा है। समकालीन रचनाकारों–संजीव, वीरेन्द्र जैन, कुणाल सिंह, रणेन्द्र, महुआ माजी, एकान्त श्रीवास्तव, मदन कश्यप, अनुज लुगुन, जसिन्ता केरकेट्टा आदि की अधिकांश रचनाएँ इस मुद्दे को लेकर लिखी गयी हैं। फिर भी हम विकास के नाम पर, जिसके आगे उन्नति, प्रगति जैसे शब्द गुम हो गये हैं, चारों ओर से प्रकृति पर आक्रमण हो रहे हैं। दूसरी ओर गाँव एवं जंगल के संसाधनों को लूटने के लिए सेज, रेड कॉरीडोर आदि के लिए लोगों को विस्थापित किया जाता है। यह कार्य देश के बहुसंख्यकों के लिए विकास नहीं विनाश है, उनके जीवनोपार्जन के रास्ते बन्द किये जाते हैं और इससे राष्ट्रीय–बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का विकास मात्र हो रहा है। इस विकास का एक पहलू है हाल ही की किसान आत्महत्याएँ। इन सबको साहित्य किस तरह शब्दबद्ध करता है, यह उसे जाँचने का एक समग्र प्रयास है।

वाणी प्रकाशन प्रस्तुत कदम को पुस्तक रूप दे रहा है, जिनके प्रति हम आभार प्रकट करना चाहते हैं।

पी. रवि
मूसा. एम.

अनुक्रम

विकास का मतलब — 7
पंकज बिष्ट

विकास की अवधारणा पर पुनर्विचार की आवश्यकता — 20
रघुवंश मणि

विकास का आतंकवाद, मुख्यधारा का भोगवाद और आदिवासी प्रति–संस्कृति — 27
रणेन्द्र

विकास, विस्थापन और साहित्य — 48
रामजी राय

विस्थापन : विडम्बना और त्रासदी — 63
वीरेन्द्र मोहन

विकास की भूमण्डलीय नीति और आदिवासी समाज का यथार्थ — 73
विनोद तिवारी

भारतीय साहित्य में विकास और विस्थापन की त्रासदी — 96
विश्वासी एक्का

विस्थापन और हिन्दी उपन्यास — 104
बीरपाल सिंह यादव

विकास, विस्थापन और समकालीन उपन्यास — 116
शिरीश जी.एस.

आदिग्राम का वह तीसरा आदमी कौन है? — 128
मूसा एम.

विकास, विस्थापन और साहित्य, साहित्य के अध्ययन के क्षेत्र में एकदम नया विषय है। अभी तक आलोचना के क्षेत्र में इस विषय को लेकर कोई पुस्तक नहीं प्रकाशित हुई है। समाजशास्त्र के क्षेत्र में विकास को लेकर एक–दो पुस्तकें आ गयी हैं। भारत विभाजन सम्बन्धी विस्थापन एवं शरणार्थी समस्याओं को लेकर पुस्तकें उपलब्ध हैं। लेकिन विकास, विस्थापन तथा उसके हेतु जो मानवीय एवं पर्यावरण–पारिस्थितिक संकट पैदा हुआ है, वह विभाजन सम्बन्धी विस्थापन से बिल्कुल अलग है। समकाल में इसी मुद्दे को लेकर साहित्य रचा जाता है, किन्तु उसके समग्र अध्ययन का कार्य नहीं हुआ है, जिसकी सख्त ज़रूरत है। इसे मद्देनज़र रखते हुए कालटी श्रीशंकराचार्य विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में जो संगोष्ठी हुई, उसमें प्रस्तुत प्रपत्रों के साथ कुछ और आलेख जोड़कर पुस्तक बनाने का प्रयास हुआ, जिसका यह सुखद परिणाम है।

आलोचना / Criticism

www.vaniprakashan.com

वाणी प्रकाशन

ISBN : 978 93 89012 24 8

आवरण : वाणी स्टूडियो